TDC-1st (H)

समाजशास्त्र का राजनीतिशास्त्र के साथ संबंध

राजनीतिशास्त्र का रुचि, प्रमुखता समाज के अध्ययन में है। इस शास्त्र के द्वारा राज्य तथा राजकीय प्रशासन के अध्ययन पर विशेष जोर दिया जाता है। इस प्रकार राजनीतिशास्त्र राजनीतिक संबंधों का विस्तृत अध्ययन है। राजनीतिशास्त्र संगठित मानव संबंधो (राजनीतिक संबंधों) का अध्ययन करता है और ये संबंध सामाजिक संबंधो का ही अंग है। समाजशास्त्र एवं राजनीतिशास्त्र के बीच घनिष्ठ संबंध है। कुछ समय पूर्व तक राज्य और समाज में कोई भेद नहीं किया जाता था। इसी कारण समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र एक ही विषय के अन्तर्गत आते थे। 18 वीं एवं 19 वीं शताब्दी में राज्य और समाज में अंतर किया जाने

लगा तथा राज्य का अध्ययन राजनीतिशास्त्र के द्वारा और जाति, वर्ग, परिवार, धर्म एवं कानून आदि का समाजशास्त्र के द्वारा किया जाने लगा।

राजनीतिशास्त्र मनुष्य को एक राजनीतिक प्राणी मानता है पर वह राजनीतिक प्राणी क्यों और कैसे बना यह जानकारी समाजशास्त्र ही प्रदान करता है। इस प्रकार समाजशास्त्र की नींव पर राजनीतिशास्त्र के भवन का निर्माण होता है।

राजनीतिशास्त्र मानव संबंधों का अध्ययन करता है जो कि सामाजिक संबंधों का अंग है। गिलक्राइस्ट के अनुसार - "राजनीतिशास्त्र मानव संबंधों के तथ्यों और सिद्धान्तों को ग्रहण करता है, जिन सिद्धान्तों और तथ्यों का अध्ययन तथा प्रतिपादन करना समाजशास्त्र का कर्तव्य है।

वर्तमान समय में दोनों शाखाओं के संबंधों में घनिष्ठता बढ़ गई है। राज्य की सदस्यता भी प्रायः जन्म से ही निर्धारित होती है। राज्य किस प्रकार का है। इसका सामाजिक, धार्मिक आर्थिक, तथा अन्य बातों पर प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक प्रकार, शिक्षा आस्थाएँ, परंपराएँ एवं रीति - रिवाज इत्यादि राजनीतिक स्थिति द्वारा संचालित होते है।

राजनीतिशास्त्र में कानून, राज्य, संप्रभुता, प्रशासन आदि का अध्ययन होता है किसी भी देश की

राजनीतिक प्रक्रिया वहाँ कि सामाजिक परिस्थितियों एवं संस्कृति से जुड़ी होती है। अतः समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र का गहरा संबंध है। राजनीतिक समाजशास्त्र राजनीतिशास्त्र और समाजशास्त्र के बीच कड़ी का काम करता है। धीरे - धीरे राजनीतिशास्त्र में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण काफी महत्वपूर्ण होता जा रहा है।